भारत शिक्षण संस्था द्वारा संचलित,

श्री.छत्रपती शिवाजी महाविद्यालय,उमरगा

जिला-उस्मानाबाद

हिंदी विभाग

प्रस्तुत कर्ता :- डॉ.एस.एन.मुच्छटे,

(हिंदी विभागाध्यक्ष)

कक्षा :- बी.ए.III वर्ष

प्रश्नपत्र क्र.XI मुख्य प्रश्नपत्र(साहित्यशास्त्र)

रस का स्वरुप

- भारतीय साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में ‘रस’ शब्द का विशेष महत्त्व।
- खाद्य पदार्थों में मधुर तरल पदार्थ को रस।
- आयुर्वेद में रसायन अथवा वनस्पति के द्रव को रस।
- अध्यात्म के क्षेत्र में परमात्मा को रस।
- साहित्य के क्षेत्र में ‘काव्यानंद’ ही रस।

- सर्वप्रथम आ.भरत ने रस के स्वरुप को स्पष्ट किया।
- 'विभावानुभव व्याभिचारिसंयोमाद्रस निष्पति'।
- विभाव,अनुभव और व्याभिचारी भावों के संयोग से इसकी निष्पति।
- आ.भरत द्वारा प्रतिपादित रस के स्वरुप पर अनेक आचार्यों ने प्रकाश।
- जैसे - आ.अभिनवगुप्त,मम्मट,विश्वनाथ आदि।

- आ.भरत ने इसकी तुलना ‘प्रपानक’ रस से।
- गुड, मिर्च, खटाई, नमक आदि को आनुपातिक परिमाण में मिलाकर पीने पर विलक्षण प्रकार का स्वाद।
- पर इसमें से पृथक रुप में केवल किसी एक का स्वाद नहीं।
- उसी प्रकार काव्य रस भी अलौकिक और विलक्षण अनुभूति।
- जो केवल आनंद।

- रस अखंड।
- रस की अनुभूति अबाध और अलौकिक।
- उसे अंश अथवा खंडों में विभाजित नहीं किया जा सकता।
- वह अपने आप में पूर्ण।
- वह अपने आप में पूर्ण अनुभव।

- रस स्व प्रकाश।
- रस, आत्मा, चेतन तथा ब्रहम् की तरह स्व प्रकाशित।
- इसलिए रस अपने आप से अभिन्न।
- उसे अन्य प्रकाशक की आवश्यकता नहीं।

- रस का अपने अभिन्न रुप में आस्वादन।
- प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता नुसार उसका अनुभव।
- रस की अनुभूति अपने आप में पूर्ण और अभिन्न।
- इस तरह की अन्य अनुभूति नहीं।
- एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की अनुभूति में सहाय्यक नहीं।
- रस का रुप एक ही। भिन्न नहीं।

- रस चिन्मय।
- रस चेतन नहीं बल्कि चेतन के जैसा।
- रस-चेतनता प्रधान सचेतन अथवा प्राणवान आनंद।

- रस वेदान्तर स्पर्श शून्य।
- रस आस्वादन के समय ज्ञान का स्पर्श।
- व्यक्ति अपने अस्तित्व को भूल जाता है।
- स्व और पर के बंधन से मुक्त।
- सभी बंधनों से मुक्त होकर शुध्द आनंद की प्राप्ति।

- रस ब्रह्मास्वाद सहोदर।
- रसास्वादन की स्थिति ब्रह्मास्वादन की तरह।
- पर ब्रह्मास्वाद का स्तर रसास्वाद से अधिक ऊँचा।
- रसास्वादन के बाद मन तुरंत लौकिकता की ओर।
- ब्रह्मास्वादन में ऐसा नहीं।

- रस लोकोत्तर आनंदमय है।
- रस का आल्हाद पार लौकिक सुख-दुख और आध्यात्मिक आनंद के बीच का।
- यह एक विशेष और अलग काव्यानंद।

‘धन्यवाद’